प्रकाशन की तिथि 01.01.2019

ओ३म्

एक प्रति मूल्य : रु० 4.00

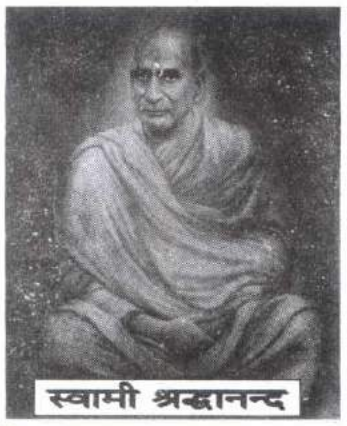

शुद्धि समाचार

सन् 1923 में स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा का मासिक मुखपत्र

माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः । अथर्ववेद 12.1.12
भूमि मेरी माता है और मैं उस मातृभूमि का पुत्र हूँ।

वर्ष 42 अंक 1

"शुद्धि ही हिन्दू जाति का जीवन है"

वार्षिक शुल्क : 50 रुपये
आजीवन शुल्क : 500 रुपये

जनवरी 2019 विक्रम सम्वत् 2075 पौष - माघ

सनातन धर्मी नेता - पं. मदनमोहन मालवीय

दूरभाष : 011-23857244

परामर्शदाता : श्री हरबंस लाल कोहली ☼ श्री चतर सिंह नागर ☼ श्री विजय गुप्त ☼ श्री सुरेन्द्र गुप्त ☼ प्रबन्धक : श्री नरेन्द्र मोहन वलेचा

हमारा राष्ट्रीय पर्व (26 जनवरी)

सांस्कृतिक पृष्ठभूमि :-

समय था जब भारत न केवल विश्वगुरु था, वरन् विश्व-सम्राट भी था। कालचक्र से यह महान् देश अपनी स्वतंत्रता को खोकर किस प्रकार विदेशी दासत्व का शिकार हुआ इसकी एक लम्बी और दर्द भरी कहानी है। हाँ, यह सत्य है कि कभी - महाराणा प्रताप और छत्रपति शिवाजी, तो कभी गुरु गाविन्द सिंह और बन्दा वैरागी, तो कभी बाल हकीकत और जोरावर फतेहसिंह जैसे बालवीर महावीर और राष्ट्रनायक अपने शौर्य और बलिदानों द्वारा हमारी परतंत्रता के पाप को ललकारते रहे। इस प्रकार यह सुस्पष्ट है कि अपनी दासता के सम्पूर्ण कालखण्ड में भारत की आत्मा ने एक क्षण के लिये भी पराधीनता को स्वीकार नहीं किया।

महाराणा प्रताप व शिवाजी के समय से उद्बुद्ध हमारे स्वाधीनता यज्ञ का विधिवत आरम्भ मंगल पाण्डे, महारानी लक्ष्मीबाई, तॉत्याटोपे और बिठूर के नानासाहब जैसे महावीरों और वीरांगनाओं द्वारा सन् 1857 की जनक्रान्ति से हुआ और इसकी पूर्णाहुति 15 अगस्त 1947 को हुई ।

सन् 1857 की जनक्रान्ति की पृष्ठभूमि के निर्माण में युग पुरुष महर्षि दयानन्द, उनके गुरुदेव दण्डी विरजानन्द जी और उनके भी गुरु स्वामी पूर्णानन्दजी का महत्वपूर्ण योगदान रहा था, यह तथ्य धीरे-धीरे अब उजागर होता जा रहा है। सन् 1857 की क्रान्ति को क्रियान्वित करने के पूर्व सन् 1856 में मथुरा में एक विशाल सभा हुई थी। उसमे सर्वखाप पंचायत, हरियाणा के प्रतिनिधि के रूप में मीर मुश्ताक मिरासी ने भाग लिया था। उन मीर साहब के दो पत्र पिछले दिनों प्रकाश में आये, जिनसे प्रकट हुआ कि इस बैठक मे प्रज्ञाचक्षु दण्डी विरजानन्द जी को एक पालकी मे लाया गया था और उन्होंने इस सभा को अंग्रेजी दासता के विरोध में बड़े मार्मिक शब्दों में सम्बोधित किया था। आगे की शोध के बारे में हम जानते ।

सन् 1857 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम के विफल होने पर जब सर्वत्र निराशा छा गई थी, ऋषि दयानन्द ने तब अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में स्वराज्य एवं स्वदेशी की भावना को अनेक प्रकरणों में बड़ी प्रखरता से प्रस्तुत किया। इतना ही नहीं विदेशी दास्ता के विरोध में सुस्पष्ट रूप से क्रान्तिबीज का वपन भी उन्होंने कर दिया।

सत्यार्थ प्रकाश के प्रणयन (1875) के दश वर्ष के बाद काँग्रेस की स्थापना एक अंग्रेज महाशय मिस्टर ए. ओ. ह्यूम् द्वारा की गई। आरम्भ में सर फीरोजशाह मेहता एवं दादाभाई नारोजी के समय तक तो कांग्रेस के समक्ष स्वराज्य प्राप्ति का लक्ष्य ही न होकर कुछेक व्यक्तियों को नौकरियाँ तथा पद आदि दिलाकर सन्तुष्ट करना मात्र था। कांग्रेस के इस उद्देश्य में एक क्रान्तिकारी मोड़ तब आया जब इसकी बागडोर महादेव गाविन्द रानाडे जैसे ऋषि दयानन्द के भक्तों के हाथ में आई, उसके बाद ही कांग्रेस भारतीय स्वाधीनता संग्राम की प्रतीक बन सकी थी पर पता नही क्यों स्वाभिमान प्रेरक इन तथ्यों से देशवासियों विशेषकर हमारे कोमलमति बालकों को तब तक अवगत ही नहीं कराया जा सका है। इतिहास की विसंगतियों को दूर कर लेने में ही देश का कल्याण निहित है।

भारतीय स्वाधीनता संग्राम की आरम्भ से ही दो धारायें रही हैं। निष्पक्ष इतिहासज्ञों ने इसे (1) शान्तिधारा और (2) क्रान्तिधारा का नाम दिया है। इन दोनों धाराओं का उत्स (मूल-उद्गम) ऋषि दयानन्द थे। शान्तिधारा के क्रम में स्वराज्य की जो गंगा दयानन्द रूपी हिमालय से प्रादुर्भूत हुई वह रानाडे एवं गोपालकृष्ण गोखले रूपी उपत्यकाओं को सीचती हुई, महात्मा गांधी रूपी क्षेत्र में आकर भारतीय स्वाधीनता रूपी हरियावल का कारण बनी और क्रान्तिधारा के जनक श्यामजी कृष्णवर्मा भी ऋषि दयानन्द के ही शिष्य थे। ऋषि ने ही उन्हें शिक्षार्थ बाहर (इंग्लैण्ड) भेजा था।

शान्तिधारा में आगे चलकर गरम दल और नरम दल - ये दो उपधारायें हो गई। लाला लाजपतराय, बाल गंगाधर तिलक और विपिनचन्द्र पाल यह लाल-बाल-पाल का त्रिक् गरम दल से सम्बद्ध था, जबकि पं. मोतीलाल नेहरु, पं. जवाहरलाल नेहरु, सरदार पटेल, डा. राजेन्द्रप्रसाद, सेठ गोविन्ददास, लालबहादुर शास्त्री जैसे कर्मयोगी एवं चिन्तक सभी महात्मा गांधी के साथ थे। सन् 1919 का जलियाँवाला बाग का खूनी काण्ड, 1921 का असहयोग आन्दोलन, 1931 का नमक कानून विरोधी सत्याग्रह, 1941 का व्यक्तिगत सत्याग्रह और 1942 का अंग्रेजों भारत छोड़ो आन्दोलन-ये सभी स्वाधीनता संग्राम के विविध मोर्चे हैं, जिनमें से अधिकांश का नेतृत्व महात्मा गांधी ने किया। आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं की इन सभी आन्दोलनों में 70 से 80 प्रतिशत तक भागीदारी रही । आर्यनेता अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द इनमें अग्रणी थे।

क्रांतिधारा भी श्यामजी कृष्णवर्मा वीर सावरकर, चापेकर बन्धु, वीरेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय, रासबिहारी बोस, अरविन्द घोष, भाई परमानन्द, भाई बालमुकन्द, हरिश्चन्द विद्यालांकार, राजा महेन्द्रप्रताप, मदनलाल ढींगरा, गेंदालाल दीक्षित, रामप्रसाद विस्मिल, अशफाकउल्ला खाँ, रोशनसिंह, सुखदेव, राजगुरु, सरदार भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद आदि महावीरों के माध्यम से देश के एक कोने से दूसरे कोने तक अपने बलिदानों द्वारा स्वाधीनता के पथ को निरन्तर प्रशस्त करती रही। इनमें भी अधिकांश आर्यवीर ही थे।

स्वाधीनता के इस महायज्ञ में वीर शिरोमणि नेताजी सुभाष का आत्मत्याग और बलिदान भी अपना अनूठा महत्व रखता है। आजाद हिन्द फौज के निर्माता इस अद्वितीय यौद्धा, सेनानी का नाम भारतीय स्वाधीनता इतिहास में अमर रहेगा।

इस प्रकार असंख्य वीरों के आत्म-बलिदान तप और त्याग की नींव पर स्वाधीनता के भवन का निर्माण हुआ और सदियों की गुलामी के पश्चात् 15 अगस्त सन् 1947 ई. को स्वतंत्रता के सूर्य का उदय हुआ और 23 जनवरी सन् 1950 ई. को भारत का संविधान संस्थिति में आया और तब से हमारे वर्तमान गणतंत्र शासन का आरम्भ हुआ।

पर्व महत्व -

15 अगस्त एवं 26 जनवरी हमारे महान् राष्ट्रीय त्यौहार है। इन दिवसों पर हमें भारतीय स्वाधीनता के लिए बलिदान और तप-त्याग करने वाले वीरों के प्रति श्रद्धांजलि एवं भावांजलि अर्पित करते हुए भारत की स्वाधीनता को अक्षुण्ण रखने के लिये और अपने महान् देश का पुनः उसका विश्वगुरु का स्थान दिलाने के लिये, अपना कर्त्तव्य पूर्ण निष्ठा से निभाने हेतु निम्न प्रकार व्रत लेना चाहिये :-

(1) हम स्वराज्य को सुराज्य (रामराज्य) बनाने के लिए स्वयं अपने आचार - व्यवहार को अच्छा यानि उत्तम बनावेंगे।

(2) हम अपने अन्दर सद्-स्वाध्याय की प्रवृत्ति को उजागर सामाजिक राजनीतिक शोषण के साथ ही देश में धड़ल्ले से पनपते जा रहे धार्मिक शोषण से भी स्वजाति की रक्षा हेतु सजग, सचेष्ट रह कर स्वकर्त्तव्य का निर्वहन करने का यथासम्भव उपाय करेंगे।

(2) हम कोई कार्य-व्यापार या व्यवसाय ऐसा नहीं करेंगे जो हमारे भारत के गौरव को लेशमात्र भी कम करे।

(4) हम अपने वोट को शहीदों

शेष पृष्ठ 2 पर...

शुद्धि समाचार में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सम्पादकीय

–आचार्य गवेन्द्र शास्त्री

भारत देश का इतिहास क्रान्ति ज्वाला से सदैव जाज्वल्यमान रहा है। क्रान्ति की मशाल थामने वाले नव युवकों का निर्माण और मातृभूमि पर न्यौछावर होने की भावना भरना आर्य समाज के गौरवपूर्ण इतिहास की स्वर्णिम परम्परा रही है। भारतीय क्रान्तिदल के अमर सेनापति तथा क्रन्तिकारियों के प्रेरणास्त्रोत एवं मार्ग दर्शक पं. रामप्रसाद "विस्मिल" का अमर बलिदान इसी दिसम्बर मास की 19वीं तारीख को सन् 1927 ई. में हुआ था, जब क्रूर अंग्रेजी सरकार ने उन्हें गोरखपुर की जेल में और उनके अभिन्न मित्र श्री अशफाक उल्ला खाँ को फैजाबाद में फाँसी पर चढ़ा दिया था। बिस्मिल जी का व्यक्तित्व विकास आर्य समाज तथा आर्य कुमार सभा की छत्रछाया में हुआ। स्वामी सोमदेव जी की प्रेरणा और पं. गेंदालाल जी दीक्षित जैसे स्वनाम धन्य देश भक्तों की संगति ने आपको परम आस्तिक और आजीवन देश हित में कार्य करने की प्रेरणा प्रदान की। पण्डित जी पूरी तरह भारत माता के लिए समर्पित जीवन जीते रहे और आमरण भारतीय क्रान्तिकारी दल के मार्ग दर्शक बने रहे। विविध गुणों से सम्पन्न बिस्मिल जी एक अच्छे कवि भी थे। अपनी एक कविता में उन्होंने स्वयं लिखा है।

यदि देश हित मरना पड़े मुझको सहस्रों बार भी,
तो भी न इस दुःख को निज ध्यान में लाऊँ कभी,
हे ईश ! भारत वर्ष में शतबार मेरा जन्म हो,
कारण सदा ही मृत्यु का देशोपकारक कर्म हो।।

भारत माता की दासता की बेड़ियों को काटने तथा जनता को देश सेवा के लिए सुशिक्षित करने की उनकी योजना थी जिसे वे आजीवन करते रहे। जनता की प्रवृत्ति देश सेवा की हो, उनमें देश के लिए बलिदान होने की भावना हो।

शोषण और अत्याचार भ्रष्टाचार के साथ-साथ भारत की परतन्त्रता समाप्त हो यह उनकी हार्दिक इच्छा थी। क्रूर अंग्रेजों द्वारा दी गई सजा से न तो वह निराश थे न ही भयभीत। क्योंकि देश सेवा का व्रत उन्होंने बहुत सोच विचारकर लिया था। अपना कर्तव्य बोध और ईश्वरीय न्याय व्यवस्था पर उनकी पूर्ण आस्था थी। अन्तिम दिवस जब उन्हें फाँसी होनी थी। फाँसी के तख्ते पर ले जाने वाले लोग जब आये तो वह "वन्दे मारतम्" और "भारत माता की जय" के नारे लगाते हुए गये। उस समय उन्होंने एक कविता पढ़ी :

मालिक तेरी रजा रहे और तू ही तू रहे,
बाकी न मैं रहूँ –न मेरी आरजू रहे।
तब तक कि तन में जान रगों में लहू रहे,
तेरा ही जिक्र या, तेरी जुस्तजू रहे।।

फाँसी के समय उन्होंने ईश्वर की विशेष प्रार्थना की तथा "विश्वानि देव सावितर्दुरितानि..." आदि मन्त्रों का पाठ करते हुए वे गोरखपुर की जेल में फाँसी के फन्दे पर झूल गये।

बिस्मिल जी के फाँसी पर चढ़ने के दृश्य का वर्णन करते हुए शहीदे-आज़म भगत सिंह ने लिखा है– "...फिर ईश्वर के आगे प्रार्थना की और फिर एक मन्त्र पढ़ना शुरु किया। रस्सी खींची गई। रामप्रसाद जी फाँसी पर लटक गये। आज वह वीर इस संसार में नहीं है। उसे अंग्रेजी सरकार ने अपना खौफनाक दुश्मन समझा। आम ख्याल यह है कि वह इस गुलाम देश में जन्म लेकर भी एक बड़ा भारी बोझ बन गया था। और लड़ाई की विद्या से खूब परिचित था। आपको मैनपुरी षड्यन्त्र के नेता श्री गेंदा लाल दीक्षित जैसे शूरवीर ने विशेष तौर पर शिक्षा देकर तैयार किया था। मैनपुरी के मुकदमें के समय आप भागकर नेपाल चले गये थे। अब वही शिक्षा आपकी मृत्यु का एक कारण बन गई। 7 बजे आपकी लाश मिली और बड़ा भारी जुलूस निकला । स्वदेश प्रेम में आपकी माता ने कहा – **"मैं अपने पुत्र की इस मृत्यु पर प्रसन्न हूँ, दुःखी नहीं । मैं श्री राम चन्द्र जैसा ही पुत्र चाहती थी। बोली श्री राम चन्द्र की जय।"**

पाठकों ! जो जाति अपने बलिदानियों और देश भक्तों को कृतज्ञता पूर्वक स्मरण नहीं करती, उसका विनाश सुनिश्चित होता है और वह कभी संकट से मुक्त नहीं हो सकती। आज की युवा पीढ़ी मातृभूमि के लिए समर्पित इन महान् क्रान्तिकारियों की भावना, उद्देश्य और कार्यशैली से परिचित होकर इनसे देश और जनता की सेवा की प्रेरणा लेकर प्राणपण से उद्देश्य प्राप्ति हेतु लगे यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। उनका अपूर्ण कार्य तभी पूर्ण होगा। आज केवल पात्र बदल गए हैं, नाटक जारी है। आवश्यकता है कि आज की युवा शक्ति उन्हीं क्रान्तिवीरों के समान भ्रष्टाचार अन्याय, उत्पीड़न और शोषण के विरुद्ध अपनी पूरी क्षमता से लड़कर लक्ष्य प्राप्ति करे तभी शहीदों की आत्मा को शान्ति और सद्गति मिलेगी।

शेष पृष्ठ 1 का...

की धरोहर मानकर उसका उपयोग जाति-बिरादरी अथवा किसी भी प्रकार के प्रलोभन से ऊपर उठकर योग्यतम एवं चरित्रवान् उम्मीदवार के लिए तथा और भी सोच समझकर करेंगे।

(5) हम अपनी व्यक्गित दिनचर्या एवं जीवन चर्या को महान् भारत के एक श्रेष्ठ नागरिक की, एक आदर्श मानव (आर्य) की दिनचर्या बनायेंगे। हम अपनी सन्तानों को सुसंस्कारवान दिव्य सन्तान बनाने का पुरजोर उपाय करेंगे और अपने परिवार में श्रेष्ठता (यानि आर्यत्व) को प्रतिष्ठित करेंगे जिससे हमारा प्यारा भारत आर्यराष्ट्र बनकर फिर से विश्वगुरु का गौरव पा सके।

(6) हम अपने राष्ट्रध्वज का सम्मान करते हुए भारत भू को अपनी मातृभूमि, पितृभूमि और पुण्यभूमि मानेंगे तथा भारत के हर निवासी को अपना राष्ट्र-बन्धु मानकर राष्ट्र में व्याप्त अज्ञान, अन्याय और अभाव में से कम से कम किसी एक शत्रु के दूरीकरण के लिए समर्पित होकर स्वजीवन का ही राष्ट्रीयकरण करेंगे, उसे धन्य करेंगे।

– चान्दरतन दमानी, प्रधान
आर्य समाज बड़ाबाजार कोलकाता

अण्डमान-निकोबार द्वीप में सुभाष ने 1943 में ही तिरंगा लहरा दिया था

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस का यह सपना था कि शिमला में स्थित वायसराय के सरकारी निवास स्थान पर तिरंगा झंडा लहराया जाये। वे यह झंडा 1943 में यहाँ लहराना चाहते थे। नेताजी के इस सपने को पूरा होने में काफी समय लगा। उन्होंने भारत की भूमि पर आजादी का झंडा लहराया शिमला में नहीं बल्कि भारत के अन्य भाग अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में। अस्थाई सरकार के गठन के बाद नेताजी सुभाष चन्द्र बोस वापस जापान लौट गये। वहाँ उन्हें एक बड़े सम्मेलन में भाग लेना था। उस सम्मेलन में जापान के सम्राट होरोहितो ने नेताजी का राष्ट्राध्यक्ष के रूप में स्वागत किया। इस सम्मेलन के दूसरे दिन यानि 6 नवम्बर 1943 को जापान के तत्कालीन प्रधानमंत्री जनरल तोजो ने घोषणा करते हुए कहा कि अण्मान निकोबार द्वीप समूह भारत की अस्थाई सरकार को सौंपे जा रहे हैं।

इस प्रकार से नेताजी की इस अस्थाई सरकार ने भारत को एक स्वतंत्र देश के रूप में प्राप्त किया नेताजी ने इस अवसर पर कहा कि अण्डमान निकोबार द्वीप समूह को अस्थाई सरकार को दिया जाना भारत की स्वतंत्रता का एक प्रतीक है। इस द्वीप समूह को प्राप्त करने के साथ नेताजी की अस्थाई सरकार को 9 राष्टों द्वारा मान्यता मिल गई।

29 दिसम्बर 1943 को नेताजी सुभाष चन्द्र पोर्टब्लेयर पहुंचे। इनके साथ आजाद हिन्द फौज के कुछ अधिकारी भी थे। इस द्वीप समूह में जापान के सैनिक इसीकारा ने उनका स्वागत किया। तीसरे दिन सुबह 31 दिसम्बर 1943 को नेताजी ने इस द्वीप में भारत का तिरंगा झण्डा फहराया। उनका वर्षो का संजोया सपना ऐसे पूरा हुआ। उन्होंने इस अण्डमान का नाम शहीद और निकोबार का नाम स्वराज्य रखा।

इस अवसर पर अपने भाषण में उन्होंने कहा कि भारतीय किसी भी जाति धर्म के हो, सब एक है और यह कभी कहा हमको तन, मन, धन से स्वतंत्रता आन्दोलन की मदद करनी है। हमें स्वतंत्रता चाहिए और इसे प्राप्त करने के लिये हम कोई भी तरीका अपना सकते हैं। हम दिल्ली की ओर कूच करेंगे और अपनी मातृभूमि को स्वतंत्र करायेगें। नेताजी सुभाष चन्द्र बोस 31 दिसम्बर 1943 को अण्मान से वापस बैंकाक चले गये। इन दोनों द्वीपों को स्वतंत्र करने के लगभग पौने दो वर्ष बाद 7 अक्टूबर 1945 को ब्रिटिश सरकार ने दुबारा इस पर कब्जा कर लिया और एक भारतीय इमामुल को वहाँ का चीफ कमिश्नरी नियुक्त किया। इस पद पर कार्य करने वाले वे पहले भारतीय थे।

–मोहन नेपाली

जीवन का महत्त्व

संसार में अनेक बहुमूल्य पदार्थ हैं। उनमें मानव-जीवन सर्वश्रेष्ठ और अमूल्य है। यह भगवान् की सर्वोत्तम देन है। जीवन की तुलना में सांसारिक सुख-भोग, धन-सम्पदा आदि तुच्छ हैं। दुनिया के समस्त सुखों में शरीर का सुख सबसे बड़ा है। शरीर से ही जगत् के सुखों को भोगा जाता है। यदि शरीर स्वस्थ नहीं है, तो सभी भोग-पदार्थ, धन-दौलत व्यर्थ हैं। दुनिया की सबसे बड़ी सम्पत्ति स्वस्थ शरीर है। शरीर रोगी होने पर सब चीजें फीकी व आकर्षणहीन लगने लगती हैं। कुछ भी अच्छा नहीं लगता है। संसारयात्रा शरीर से ही पूरी करनी है। इस शरीर को दैवी नाव और धर्म का साधन कहा गया है। यद दुर्लभ मानवयोनि अनेक जन्मो के पुण्यों के बाद सौभाग्य से मिलती है। जितने भी शरीरधारी प्राणी हैं, उनमें मानवशरीर की महत्ता सबसे अधिक है। मनुष्य-शरीर की रचना और क्रियाशक्ति बड़ी अद्भुत है। परमात्मा की सृष्टि का सर्वोत्तम तथा चमत्कारी नमूना मानवदेह है। मानव के बिना सृष्टि का कोई महत्त्व नहीं है। मनुष्य ही सृष्टि का सौन्दर्य है। मनुष्य से ही संसार की उपयोगिता है।

सृष्टि की समस्त योनियों में मानव-जीव सर्वोत्तम, अमूल्य तथा दुर्लभ माना गया है। जीवन अनमोल रत्न है। दुनिया में सबसे कीमती चीज यह जीवन है। इसी से संसार के रिश्ते-नाते तथा सम्बन्ध हैं। जगत् की सब चीजें धन और सुख-भोग के पदार्थ तराजू के एक पलड़े पर रख दिए जायें और जीवन को दूसरे पलड़े पर रखा जाए, तो जीवन का पलड़ा भारी होगा, क्योंकि जीवन की तुलना मे सब चीजें तुच्छ हैं। यह सुन्दर संसार प्रभु ने मानव के लिये बनाया है। जीवन से ही जगत् है। नरतन पाना अपने में सबसे बड़ी उपलब्धि है। जीवन की कीमत उनसे पूछो, जिनके पास जीवन नहीं है, जो मर चुके हैं। टेड़ा-मेढ़ा रोगी व दुःखी व्यक्ति भी हर हाल में जीना चाहता है। हम जिन्दा हैं, यह जीवन की सबसे बड़ी प्राप्ति, उपलब्धि और प्रभुकृपा है। परमात्मा की सृष्टि में सर्वोत्तम ज्ञानपूर्ण रचना मानव देह की है।

चौरासी लाख योनियों में सबसे ऊँची पदवी मानव-जीवन की है। संसार में किसी भी पशु-पक्षी का सिर इन्सान की तरह ऊपर की ओर नहीं है। सभी का सिर नीचे की ओर है। इसका कारण है कि पाप का सिर नीचे और पुण्य का सिर ऊँचा होता है। मनुष्य शरीर में श्वास-प्रक्रिया सृष्टि का अद्भुत चमत्कार है। प्रभु ने इस शरीर रूपी मिट्टी के खिलौने में अनूठे ढंग से श्वासों की सरगम को जोड़ा है। यह खिलौना मिट्टी से बना है और अन्त में टूटकर मिट्टी में ही मिल जायेगा। दुनिया की सबसे पेचीदा मशीन यह मानवशरीर है। इसमें लाखों नस-नाड़ियों का जोड़ है। इसकी रचना और क्रिया-विज्ञान दोनों ही विलक्षण और आकर्षक हैं। आज तक कोई डॉक्टर भी पूरी तरह से शरीर को नहीं जान सका है।

व्यास जी महाभारत में कहते हैं-

नहि मानुषात् श्रेष्ठतरं हि किंचित् ।

जगत् में नरतन से बढ़कर उत्तम व श्रेष्ठ और कुछ भी नहीं है। मानवदेह सृष्टि की अद्भुत रचना और उपलब्धि है।

मनुष्यजन्म जीव की सबसे उन्नत व श्रेष्ठ अवस्था है। यह नरतन सबको नहीं मिलता है। दुर्लभ वस्तु कीमती होती है। जैसे दुर्लभ और कीमती है, ऐसे ही मनुष्यदेह दुर्लभ और समस्त योनियों में श्रेष्ठ है, इसीलिये अमूल्य है। यह जीवन प्रभु द्वारा दिया गया आत्मा के लिए स्वर्णिम वरदान और अवसर है। शरीर आत्मा का घर है इसमें ईश्वर का भी निवास है। जब ईंट-पत्थर के मन्दिर को साफ-सुथरा व सुगन्धित रखा जाता है, तो हम जागृत चेतन शरीर-मन्दिर को अनेक बुराइयों व दोषों से क्यों भर लेते हैं? इसकी पवित्रता तथा स्वच्छता अत्यन्त आवश्यक है। जिसने इसकी सफाई को जान लिया, उसको खुदाई की पहिचान हो गई –

तूने मुझको जग में भेजा,
देकर निर्मल काया।
आकर के संसार में मैंने,
इसको दाग लगाया ।।

हम गहनों, कपड़ों तथा सामान की प्रशंसा करते हैं, इसीप्रकार जिसने शरीर व अंग दिए, जिन पर हम गहने तथा कपड़े पहिनते हैं, उस परमात्मा की प्रशंसा और धन्यवाद करो। उसे स्मरण रखो। आत्मा के संयोग से ही शरीर की पवित्रता और कीमत है –

रात गँवाई सोय कर, दिवस गँवायो खाय ।
हीराजन्म अमोल था, कौड़ी बदले जाय ।।

एक बार हाथ से निकल जाने के बाद पता नहीं, यह जीवन फिर मिले या न मिले! पता नहीं फिर कब मनुष्यजन्म का नम्बर आए! इसलिये एक-एक पल और श्वास अपने में महत्त्वपूर्ण व कीमती है। करोड़ों की सम्पत्ति देने पर भी अन्त समय में एक श्वास व पल नहीं मिलता है। प्रभु ने शरीर के रूप में हमें करोड़ों की सम्पत्ति मुफ्त में दी है। इसका एक-एक अंग अपने में अमूल्य है। इसका महत्त्व तब पता चलता है, जब हमारा कोई अंग का भंग हो जाता है और शरीर का कोई अंग काम नहीं करता है। जब से सृष्टि बनी है, जीव आवागमन के चक्र में घूम रहा है। हम लोग संसार में न जाने कितनी योनियों में आए और गए होंगे, मगर मानवजन्म का पुण्य अवसर कभी-कभी मिलता है। सन्त तुलसीदास ने बड़े मार्मिक शब्दों में जीवन की महत्ता का वर्णन किया है-

बड़े भाग मानुष तन पावा ।
सुर-दुर्लभ सद्ग्रन्थहिं गावा ।।

उत्तमकर्मों से पुण्यशाली को ही यह जीवन प्राप्त होता है, सभी को प्राप्त नहीं। जगत् में नाना प्रकार की योनियों का जाल बिछा हुआ है। अनन्त जीव भोगचक्र में पड़े हुए हैं। जल, थल तथा नभ में असंख्य जीव भोग-चक्र में घूम रहे हैं। कुछ जीव उत्पन्न होते हैं और कुछ काल के पश्चात् मर जाते हैं। मच्छर, मक्खी तथा अन्य जीवों का जीवन बहुत छोटा होता है। समस्त योनियों में मानवजीवन सर्वोच्च पदवी है। वेद इस शरीर की दिव्यता और श्रेष्ठता का सन्देश देता है और इसे देवताओं की नगरी बताता है –

'अष्टचक्रा नव द्वारा देवानां पूरयोध्या ।'

यह शरीर अयोध्या-नगरी है, अर्थात् इसको कोई अन्य शरीर पराजित नहीं कर सकता। इसमें देवता निवास करते हैं। इसमें आठ चक्र और नौ द्वार हैं। यह शरीर भगवान् का मन्दिर है। मानवदेह अद्भुत शक्तियों का भण्डार है। इसको विशेष बुद्धि, इन्द्रियाँ तथा विवेक प्राप्त हैं। हमको सोचने, समझने और निर्णय लेने की शक्ति मिली है। मानव-मस्तिष्क के विलक्षण और आश्चर्यजनक क्रियाकलापों के समक्ष सभी चीजें तुच्छ प्रतीत होती हैं। इस सृष्टि में मनुष्य की बुद्धि तथा हाथों का कमाल है। मानव के अनेक अद्भुत, विलक्षण व चमत्कारी आविष्कारों ने संसार को भर दिया है। इस मनुष्य योनि को पाने के लिये अनेक जन्म लग जाते हैं। नरतन की कीमत उन जीवों से पूछो, जो न जाने कब से गन्दी नालियों में पड़े सड़ रहे हैं। अनेक जीव तरह-तरह के कष्टों अभावों और पीड़ा में अपना कर्मफल भोग रहे हैं और अन्धकार-पूर्ण लोकों व योनियों में जीवन गुजार रहे हैं। प्रभु की सबसे बड़ी जेल समुद्र है, जिसमें अनन्त जीव हैं, जो दिनरात पानी में ही रहते, खाते, सोते और जीवन गुजारते हैं। उनसे पूछो मनुष्यजन्म की कितनी कीमत और महत्त्व है। कवि ने इन सुन्दर शब्दों में जीवन के महत्त्व को बताया है –

इस नर तन को पाना, बच्चों का कोई खेल नहीं ।
जन्म-जन्म के शुभकर्मों का,
होता जब तक मेल नहीं ।।

हमें प्रभु का धन्यवाद इसलिये करना चाहिये कि उसने हमें समस्त योनियों में श्रेष्ठ मानवजीवन प्रदान किया है, नहीं तो हम न जाने कहाँ-कहाँ, किन-किन अन्धकारभरी योनियों में भटक रहे होते। क्या परमात्मा का यह हम पर कम उपकार है कि उसने मनुष्य जीवन जैसा अलभ्य अवसर प्रदान किया? पशुपक्षी, कीट-पतंग आदि भोगयोनियाँ हैं। इनमें अशुभ व पापकर्मों के फल भोगे जाते हैं। हर योनि में तीन प्रकार के जीव होते हैं- उत्तम, मध्यम तथा निकृष्ट। जीव एक योनि से दूसरी योनि तथा विभिन्न लोकों में आवागमन करते हैं। इसीलिये किसी एक समय में, किसी एक योनि में तथा किसी एक लोक में जीवों की संख्या घटती बढ़ती रहती है।

अनेक योनियों व जन्मों को पार करके जीव नरतन को पाने का अधिकारी बनता है। यदि नरतन पाने के बाद भी आत्मा पापकर्म करती है, तो उसे पाप के फल को भोगने के लिये भिन्न-भिन्न योनियों में जाना पड़ेगा। यह जीवन संसार की सबसे बड़ी ऊँचाई है। यदि मनुष्य निम्न योनियों में जाता है, तो यह वैसे ही हुआ, जैसे कोई व्यक्ति एक करोड़ जीतकर फिर हार जाये। दुनिया में जितना महत्त्व तथा मूल्य मानव-जीवन का है, उतना किसी भी प्राणी का नहीं है। रोज न जाने कितने जीव मरते हैं, पर उनकी मृत्यु पर कोई शोक, चिन्ता व दुःख प्रकट नहीं करता है, उनकी अन्त्येष्टि की सूचना अखबार में नहीं छपती है। मनुष्य-जीवन की सबसे ऊँची पदवी पर पहुँचने के बाद निकृष्ट योनियों में चले जाना, जीवन का सबसे बड़ा अपमान और पतन है। शास्त्र कहते हैं –

सर्वेषामेव जन्तूनां मनुष्यतत्वं हि दुर्लभम् ।।

सभी जीव-योनियों में मनुष्यजन्म दुर्लभ व श्रेष्ठ है। इसके महत्त्व व कीमत को समझना चाहिये। हम किसी चीज की कीमत तब समझते हैं, जब वह हमारी दृष्टि से ओझल हो जाती है। इन्सान को जीवन की समझ तब आती है, जब जीवन उसके हाथों से निकल जाता है। प्रेरक शब्द हमें समझा रहे हैं-

फिर मत कहना कुछ कर न सके,
जब नरतन तुम्हें नीरोग मिला ।
सत्संग का भी सुयोग मिला,
फिर भी भवसागर तर न सके ।।

जो अज्ञानी व्यक्ति हीराजन्म गँवा देता है, उसे बाद में पछताना पड़ता है। सवेरे से शाम तक का समय पानी के प्रवाह की तरह बहता चला जाता है और पता नहीं चलता कहाँ और कैसे निकल गया। बचपन कब आया, जवानी कब आई और कब चली गई फिर एक दिन बुढ़ापा चोर की तरह दबे पाँव आ बैठता है और दुर्लभ मानवजीवन बातों-बातों में व्यर्थ चला जाता है। संसार में लाखों-करोड़ों लोग जन्म लेते हैं और जीवन भोगते और चले जाते हैं। कोई-कोई व्यक्ति, सार्थक, उपयोगी एवं सुन्दर जीवन जी कर ही संसार से जाते हैं। जैसे नदी का प्रवाह एक बार बह जाता है, तो फिर लौटकर नहीं जाता है, वैसे ही दिन और रातें मनुष्य की आयु लेकर चले जाते हैं और फिर लौटकर नहीं आते हैं। दुनिया के सब पदार्थों से ऊपर और महत्त्वपूर्ण कीमती चीज मानवजीवन है। ये पंक्तियाँ हमें सचेत करती हैं –

जीवन खत्म हुआ तो जीने का ढंग आया ।
शमा बुझ गई तो महफिल में रंग आया ।।

–डॉ. महेश विद्यालंकार

"महामृत्युंजय मन्त्र" के नाम पर ठगी का पर्दाफाश

"महामृत्यंजय मन्त्र" के विषय में जनसाधारण में यह धारणा फैली हुई है कि इस मन्त्र के जाप से रोग दूर होकर मृत्यु को टाला जा सकता है। यही कारण है कि मरणासन्न अर्थात् मृत्यु के कगार पर पड़े असाध्य रोगियों के पारिवारिक इष्टजन इस मन्त्र का जाप करवाते हैं। इस भ्रान्त धारणा के प्रचार व प्रसार के पीछे कर्मकाण्डी पण्डितों का प्रमुख हाथ होता है, कारण उनकी आजीविका के अनेक साधनों में यह भी एक साधन बन गया है। इस मन्त्र का सही अर्थ या विवेचना करने से पूर्व बता देना चाहता हूँ कि वेद के मन्त्रों का सही सन्दर्भ में यही अर्थ व व्याख्या न होने के कारण कई बार हास्यास्पद स्थिति भी बन जाती है जिसके कारण वेद-विद्या के प्रति लोगों में अलगाववाद, अविश्वास, अल्पज्ञता, अरूचि, अश्रद्धा, अनास्था आदि उत्पन्न हो जाती है। ऐसा अक्सर तभी होता है जब पण्डितों और तान्त्रिकों के बताए अनुसार उस मन्त्र के जाप का वान्छित अर्थात् चाहना के अनुसार फल नहीं मिल पाता है। इसी प्रकार कुछ धूर्त, पाखण्डियों ने वेद के "महामृत्युंजय मन्त्र" के विषय में एक गलत अवधारणा फैला रखी है जो केवल उनकी बाजारवादी सोच का परिणाम है, इनके द्वारा धर्मभीरू लोगों के मध्य में ऐसी मिथ्या बात प्रचलित की गई है कि इस "महामृत्युंजय मन्त्र" के जपने से मरणासन्न व्यक्ति को बचाया जा सकता है, मृत्यु को पीछे धकेला जा सकता है। और इस प्रकार मिथ्या भाषण कर ये पेटार्थी एक सप्ताह के मंत्रजाप अनुष्ठान के लिए इक्कीस-इक्सीस हजार रूपये तक लोगों से ठग लेते हैं, उसमें भी अपने रहने-खाने का अलग से प्रबन्ध करवा कर ऐश लूटते हैं और यजमान बेचारा रोगी व्यक्ति को बचाने के लिए इनके जाल में फँसता चला जाता है। यदि ऐसी बात होती तो श्रीराम और श्रीकृष्ण जैसे महापुरुषों को कौन मृत्यु का ग्रास बनने देता? परमात्मा की व्यवस्था के अनुसार जन्म लेने वाले की मृत्यु निश्चित होती है उसे किसी भी प्रकार टाला नहीं जा सकता अर्थात् सबको एक ना एक दिन मृत्यु का ग्रास बनना ही है, यह निश्चित है ये अटल सत्य है किसी भी प्रयास से उसे टालना असम्भव है। वस्तुतः वेद उनकी रक्षा करते हैं जो वेदों की रक्षा करते हैं और यह लक्ष्य तभी सम्पादित हो सकेगा जब वेद मन्त्रों की सही सन्दर्भ में यही व्याख्या होकर सही क्रियान्वयन होगा।

यजुर्वेद के उपरोक्त मन्त्र को पौराणिक जगत ही नहीं आर्य जगत में भी मृत्युंजय अथवा "महामृत्युंजय मन्त्र" के नाम से जाना जाता है। इस मंत्र के अर्थ पर विचार करने से पूर्व इस दार्शनिक प्रश्न पर चिंतन करें कि जन्म के पश्चात् क्या मृत्यु एक स्वभाविक क्रिया नहीं है? क्या शरीर धारण किया हुआ प्राणी सदैव उसी शरीर में रह सकता है? नहीं, वास्तविकता तो ये हैं कि मृत्यु तो स्वभाविक है लेकिन मृत्यु के पश्चात् फिर से जन्म होना भी स्वभाविक है, और बार-बार होने वाले इस जन्म और मृत्यु के बन्धन अर्थात् जन्म-मरण के बन्धन से छूटने के उपाय को मुक्ति अर्थात् मोक्ष कहते हैं। जिसके लिए पुरूषार्थ करने जीवात्मा मानव देह लेकर संसार में आता है। वस्तुतः इस मंत्र के द्वारा ईश्वर से बंधन (जन्म-मृत्यु) से मुक्त होने की प्रार्थना की गई है, बंधन और मुक्ति के रहस्य को समझाने के लिए पहले मंत्र के शब्दार्थ को समझें। प्रस्तुत मंत्र है :-

"ओ३म् त्र्यम्बकम् यजामहे सुगन्धिम्
पुष्टिवर्धनम् उर्वारुकमिव
बंधनान्मृत्योर्मुक्षीय मा ऽमृतात्।"

पदार्थ - हम लोग जो सुगन्धिम्-शुद्ध गन्धयुक्त, पुष्टिवर्धनम्-शरीर, आत्मा और समाज के बल को बढ़ाने वाला त्र्यम्बकम्-रुद्ररूप जगदीश्वर है, उसकी यजामहे-निरन्तर स्तुति करें। इनकी कृपा से उर्वारुकमिव-जैसे खरबूजा फल पककर बन्धनात्- लता के सम्बन्ध से छूटकर अमृत के तुल्य होता है, वैसे हम लोग भी मृत्योंः-प्राण व शरीर के वियोग से मुक्षीय-छूट जावें अमृतात्-और मोक्षरूप सुख से मा-श्रद्धारहित कभी न होवें।

यह यजुर्वेद के तीसरे अध्याय का 60वां मंत्र है, इसमें उपमा अंलकार है, इसमें भक्त ईश्वर से प्रार्थना करता है कि हे ईश्वर! आप निराकार, सर्वव्यापक, तीनों लोकों के स्वामी, सर्वज्ञ और जगत को पुष्टि प्रदान करने वाले हो, सबके पालनहार हो। जिस प्रकार खरबूजा सुगन्धि व रस से पक कर बेल से स्वतः ही अलग हो जाता है उसी प्रकार हम भी आपकी भक्ति द्वारा ज्ञान, बल व आनन्द में परिपक्व होकर इस संसार रूपी बन्धन से छूटकर मोक्ष को प्राप्त हो जावें। स्मरण रहे, इस मंत्र का शिवलिंग, महाकाल वा ज्योतिलिंग से दूर-दूर का भी कोई वास्ता नहीं। इस मंत्र के उल्टे-पुल्टे अर्थ करके पण्डे-पुजारियों ने अपना स्वार्थ सिद्ध करने का प्रयास किया है। "गायत्री मंत्र" की तरह यह मंत्र भी परमात्मा की स्तुति, प्रार्थना व उपासना का मंत्र है। इस मंत्र के अर्थ में स्पष्ट है कि इस मंत्र में मृत्यु के बंधन से मुक्ति की प्रार्थना की गई है और मृत्यु से बचने का एक ही उपाय है कि पुनः जन्म न हो और इस जन्म-मरण के बंधन से छूटने के लिए ही इस मनुष्य शरीर को प्राप्त करने की अनिवार्यता है अर्थात् मनुष्य जन्म का उद्देश्य ही मोक्ष (अत्यंत दुःखो की निवृति अर्थात् आनन्द की) प्राप्ति है। कहने का तात्पर्य है परमात्मा द्वारा जीवात्मा को धर्मानुकूल पुरुषार्थ करने पर ही मनुष्य जीवन प्रदान किया जाता है अर्थात् मनुष्य जाति में जन्म की प्राप्ति होती है ताकि वह सत्कर्मों द्वारा जन्म-मृत्यु रूपी बंधन से स्वयं को छुड़ा सकें। अन्यथा भोग योनियों अर्थात् पशु-जाति में जन्म मिलता है। मनुष्य जन्म की प्राप्ति के पश्चात मनुष्य स्वतन्त्र होता है कि वह सकाम कर्म करता हुआ बार-बार जन्म और मृत्यु को प्राप्त कर दुःख भोगे या निष्काम कर्म करते हुए ईश्वरीय आनन्द अर्थात् मोक्ष को प्राप्त करे। यदि सकाम कर्म करता है तो सांसारिक बन्धनों से जुड़ता है जो दुःख का हेतु है और यदि निष्काम कर्म करता है तो ईश्वर के आनन्द से जुड़ता है जो कि मोक्षसुखदायक अर्थात् बंधन से मुक्ति ही ओर ले जाने वाले है। ईश्वरीय वाणी "वेद" में उपरोक्त मंत्र में मृत्यु के बंधन से खरबूजे के समान छूटने के लिए कहा गया है। हम देखते हैं कि खरबूजे को यदि बिना पके कच्ची अवस्था में उसकी डाल से अलग कर दिया जाए तो उसमें सुगन्धि नहीं आती शक्ति वर्धक नहीं होता और खराब हो जाता है इसी प्रकार यदि व्यक्ति पक्वावस्था अर्थात् वैराग्य भाव को छोड़कर अन्य किन्हीं कारणों से परिवार को, संसार को त्याग कर अलग होने का प्रदर्शन करें तो भी उसकी यश रूपी सुगन्धि समाज में नहीं फैलती वह अपना या अन्य का उद्धार नहीं कर पाता है अंततः अपना अमूल्य जीवन बर्बाद कर लेता है। आत्मा की तुलना खरबूजे से देना परमेश्वर की अमृत वाणी का कमाल ही है आईए! देखें :-

जब खरबूजा पककर अलग होता है तो उससे जुड़ी नाल सर्वथा पृथक होकर डाल के साथ ही रह जाती है खरबूजे के साथ नहीं जाती इसी प्रकार सच्चा वैरागी अर्थात् परिपक्व योगी वह है जो संसार की वस्तुओं और व्यक्तियों से सर्वथा मोह मुक्त हो गया हो, वासना का लेशमात्र भी शेष ना हो। लोकहित में आसक्ति रहित जीवन यापन करें।

जैसे पके हुए खरबूजे की सुगन्धि उसकी उपस्थिति का आभास करा देती है, ऐसे ही व्यक्ति की ख्याति अपने आप दूर-दूर तक पहुँच जाती है उसे अपना प्रचार करने की आवश्यकता या इच्छा नहीं रहती वह लोकैष्णा रहित हो जाता है। जैसे खरबूजा पकने पर पीला हो जाता है पुराने रंग को त्याग कर नया रंग धारण कर लेता है वैसे ही वीतरागी (वैरागी) व्यक्ति में दिव्य गुणों का समावेश हो जाता है कहते हैं कि खरबूजे की संगति में आकर दूसरा खरबूजा भी वही रंग पकड़ता है इसी प्रकार वीतराग योगी की संगति में रहने वाले अन्य साधकों में धीरे-धीरे देवीय गुण आने लगते हैं वैराग के रंग में रंगा हुआ व्यक्ति इतना आकर्षक हो जाता है कि सामान्यजन उसकी ओर खींचे चले जाते हैं। जिस प्रकार पका हुआ खरबूजा मीठा और स्वादिष्ट हो जाता है उसी प्रकार परिपक्व योगी की वाणी मिठास से भरी होती है जो श्रोताओं को अत्यन्त प्रिय और रूचिकर लगती है। खरबूजा बाहर से दस भागों में बँटा

हुआ प्रतीत होता है किंतु भीतर से एक ही रहता है संतरे जैसा अलग–अलग नहीं इसी प्रकार दस इन्द्रिय युक्त योगी का अन्तःकरण समस्त जीवों के लिए एक सा हो जाता है ना किसी से लगाव और ना किसी से परायापन उसके लिए सम्पूर्ण विश्व एक जैसा हो जाता है।

पके हुए खरबूजे के बीज उससे पृथक् हो जाते हैं उसी प्रकार व्यक्ति के समस्त संस्कार उसके चित्त से पृथक् हो जाते हैं संस्कारों के रहते मोक्ष प्राप्त नहीं हो सकता अर्थात् पुनर्जन्म धारण करना पड़ता है कहते हैं खरबूजे की और कोई उंगली दिखावे तो वह खराब हो जाता है योगी भी अपना आचारण ऐसा आदर्श रखना चाहिए कि उसके चरित्र को लेकर किसी की उंगली उसकी ओर ना उठे अन्यथा उसका जीवन निन्दा के योग्य हो जाएगा तब ना उसमें आकर्षण सुगन्धि रहेगी और ना आनन्द रूप रस परिपक्वता के पूर्व ही वह योग भ्रष्ट और बर्बाद हो जाएगा।

वैदिक विद्वानों द्वारा अक्सर कहा भी जाता है कि ब्रह्म अर्थात् ईश्वर प्राप्ति का मार्ग अत्यन्त दुर्लभ है उस पर चलना चाकू की तेज धार पर चलने के समान है अतः महानतम लक्ष्य प्राप्त करने के लिए पूरी सावधानी आवश्यक है, खरबूजे के साथ योग साधक की तुलना करते समय यह भी समझना है कि जैसे खरबूजा बेल से जूड़े रहकर ही पकता है और पूरा पक जाने पर स्वतः ही बेल से पृथक हो जाता है अर्थात् छूट जाता है उसी प्रकार साधक भी प्रकृति और प्राकृतिक पदार्थों के साथ रहते हुए साधनारत रहता है तथा परिपक्व हो जाने के पश्चात् स्वतः उनसे निर्लिप्त (दूर) हो जाता है। इस प्रकार उपरोक्त मंत्र में सांसारिक बंधनों से मुक्ति और मोक्ष आनन्द की प्राप्ति हेतु ईश्वर से प्रार्थना की गई है। बस, इसी प्रकार वेद के मंत्रों के अर्थों को सही प्रकार से समझना पड़ेगा, अन्यथा उपरोक्त प्रकार के अन्धविश्वास और अविद्या के बढ़ने से भारतवर्ष (आर्यावर्त) देश उन्नति की बजाय पतन की ओर उन्मुख होता रहेगा और धर्म के ठेकेदारों का ये लूट का बाजार निरन्तर चलता रहेगा।

–गंगाशरण आर्य (साहित्य सुमन)
ग्राम–शाहबाद मोहम्मदपुर, दिल्ली
मो. 9871644195

अनमोल पदार्थों से पाएं आरोग्य और दीर्घायु का उपहार

फल–सब्जियों और जड़ी–बूटियों के रूप में हमें ऐसे कई अनमोल पदार्थ कुदरती तौर पर मिले हुए हैं, जिनका इस्तेमाल करके अपनी सेहत को संवारा जा सकता है तथा उम्र भी बढ़ायी जा सकती है। इसलिए दवाओं की बजाय इनका इस्तेमाल ही बेहतर होगा।

अच्छी सेहत, चुस्ती–स्फूर्ति और लंबी उम्र की ख्वाहिश रखने वालों के लिए कुछ चुनिंदा अनमोल पदार्थ निम्नलिखित हैं –

पालक – 1 कप पालक के रस के साथ 1 कप गाजर का रस, आधा कप चुकंदर का रस और आधा कप सेब का रस मिलाकर सेवन करने से शारीरिक कमजोरी दूर होती है। इसके अलावा सब्जी, सूप आदि रूपों में भी पालक का सेवन फायदेमंद है। पालक में बीटा कैरोटिन नामक विटामिन पाया जाता है, जो शारीरिक विकास में सहायक होता है।

मुनक्का – मुनक्का को दूध में उबालकर सेवन करने से शक्ति–स्फूर्ति बढ़ती है और शरीर पुष्ट होता है। मुनक्का, किशमिश, छुहारा, गोला गिरी, मखाना और खीरा–ककड़ी के बीज (सब मिलाकर 50 ग्राम) लेकर आधा लीटर पानी में 12 घंटे पहले भिगो दें और सुबह में गाय के दही में डालकर खूब चबा–चबाकर खाएं। यह प्रयोग वजन बढ़ाने और शरीर को बलवान बनाने में सहायक है।

नारियल – नारियल की गिरी, बादाम, अखरोट और पोस्ता के दाने मिलाकर सेवन करने से शक्ति बढ़ती है। नारियल की गिरी, बादाम, मुनक्का और पीपर बराबर मात्रा में लेकर इस मिश्रण के बराबर तिल भी कूट–पीसकर इसी में मिला दें। अब इस मिश्रण में आवश्कतानुसार मिश्री मिलाकर रख लें। सुबह में खाली पेट इस मिश्रण का सेवन करने से बल–बुद्धि और स्फूर्ति में बढ़ोतरी होती है।

बादाम – बादाम खाने से शरीर स्वस्थ और मजबूत होता है। 10 बादाम गिरी रात में पानी में भिगोकर सुबह में छिलका उतारकर बारीक पीसकर इसमें 30 ग्राम मक्खन और थोड़ी–सी चीनी मिलाकर डबलरोटी के 4 टुकड़ों में लगाकर खाएं, फिर ऊपर से 250 मि.ली. दूध पी लें। 6 माह तक लगातार यह प्रयोग करने से शरीर हृष्ट–पुष्ट होता है और याददाश्त तेज होती है।

शकरकंद – शकरकंद को बारीक काटकर सुखाने के बाद कूट–पीसकर आटा तैयार करके रख लें। 25–25 ग्राम की मात्रा में यह आटा लेकर 25 ग्राम शुद्ध घी में भूनें और स्वाद के अनुसार चीनी में मिलाकर हलवा बना लें। इस हलवे को और पौष्टिक व स्वादिष्ट बनाना हो, तो इसमें बादाम, पिस्ता तथा सूखे नारियल के बारीक टुकड़े भी डाल दें। यह हलवा खाने से शरीर हृष्ट–पुष्ट होता है।

तिल – जाड़े के दिनों में तिल की बनी गजक, रेवड़ी और लड्डू खाने से शक्ति–स्फूर्ति बढ़ती है। तिल के तेल की मालिश से दुबला–पतला शरीर भी सुडौल व पुष्ट हो जाता है।

आंवला – स्वस्थ रहने के लिए 1–2 आंवलों को उबालकर चीनी मिलाकर रोजाना भोजन के साथ जरुर खाना चाहिए । अश्वगंधा और सुखे आंवलों को बराबर मात्रा में लेकर कूट–पीसकर चूर्ण तैयार करके बोतल में भरकर रख लें। शक्ति संचय के लिए तथा वात रोग दूर करने में यह योग खासतौर पर उपयोगी है।

पिप्पली – 50 ग्राम पिप्पली के चूर्ण को 1 लीटर दूध में डालकर तब तक उबालते रहें, जब तक दूध का खोया न बन जाए। इस खोये को भूनकर इसमें आधा किलोग्राम खांड मिलाकर रख लें। रोजाना सुबह–शाम 20–20 ग्राम की मात्रा में इसका सेवन करके दूध पीने से शक्ति–स्फूर्ति बढ़ती है।

खजूर–छुहारा – खजूर की गुठली निकालकर शेष भाग 250 ग्राम की मात्रा में लेकर 80 ग्राम गाय के घी में भूनकर हलवा बना लें। इस हलवे का सेवन करने से शक्ति–स्फूर्ति बढ़ती है और शरीर हृष्ट–पुष्ट हो जाता है।

अश्वगंधा – अश्वगंधा और सूखे आंवलों को बराबर मात्रा में लेकर कूट–पीसकर चूर्ण तैयार करके बोतल में भरकर रख लें। शक्ति संचय के लिए तथा वात रोग दूर करने में यह योग खासतौर पर उपयोगी है।

शहद – असली शहद 20 ग्राम और दही 100 ग्राम की मात्रा में मिलाकर रोजाना सुबह में सालभर तक खाने से सेहत बनती है और शरीर स्वस्थ होता है।

संतरा – संतरे का रस पीने से कमजोरी व सुस्ती दूर होती है तथा शक्ति–स्फूर्ति और रोग–प्रतिरोधक क्षमता में बढ़ोतरी होती है।

गुलाब – गुलाब की पंखुड़ियों से बना गुलकंद शरीर की कमजोरी दूर करता है। इसके साथ ही यह कब्ज की भी बड़ी अच्छी दवा है।

बथुआ – बथुआ से शरीर में बल की वृद्धि होती है। इसके लिए बिना मसाले के बथुआ के साग और रस का सेवन करना चाहिए।

गुड़ – गुड़ शरीर को ऊर्जा व शक्ति प्रदान करता है, क्योंकि इसमें आयरन (लोहा), जिंक, कैल्शियम, प्रोटीन और अन्य महत्वपूर्ण खनिज पाए जाते हैं।

टमाटर – टमाटर शरीर को रोगों से बचाने की शक्ति देता है तथा कमजोरी और आलस्य दूर करता है। बच्चों को हृष्ट–पुष्ट बनाने के लिए टमाटर खूब खिलाना चाहिए। सुबह–सुबह खाली पेट टमाटर खाने से हड्डियां मजबूत होती हैं।

सिंघाड़ा – सिंघाड़ा रक्त व ज्ञान तंतु को विशेष रूप से बल प्रदान करने वाला होता है। इसमें मांसवर्धक गुण होने से दुबले–पतले व कमजोर व्यक्तियों को इसका सेवन जरूर करना चाहिए।

केला – रोजाना 2–2 केले खाकर ऊपर से 250 मि. ली. दूध पिएं। 2 माह तक यह प्रयोग करने से शरीर हृष्ट–पुष्ट हो जाता है। केले में ग्लूकोज की पर्याप्त मात्रा पायी जाती है, इसलिए इसका सेवन करने से शरीर को भरपूर शक्ति मिलती है।

तुलसी – तुलसी के पत्तों का रस सुबह में खाली पेट सेवन करने से शरीर स्वस्थ रहता है और शक्ति–स्फूर्ति बढ़ती है। शहद में तुलसी का रस मिलाकर लेने से सर्दी–जुकाम, बुखार, श्वास रोग आदि में लाभ मिलता है तथा रोग–प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है।

मुलैठी – रात में सोने से पहले मुलेठी का चूर्ण 3–5 ग्राम की मात्रा में लेकर 2.5 ग्राम शुद्ध घी और 7.5 ग्राम शहद मिलाकर चाटें, फिर दूध पिएं। इस प्रयोग से शरीर पुष्ट, सुडौल व मजबूत बनता है।

काजू – काजू का तेल बहुत पौष्टिक होता है, इसलिए शक्ति संचय करने के लिए इसका सेवन करना चाहिए।

गाजर – गाजर का रस 50–50 ग्राम की मात्रा में रोजाना पीने से शारीरिक–मानसिक शक्ति बढ़ती है। गाजर खाने से शरीर की लंबाई बढ़ती है। बच्चों के शारीरिक विकास के लिए गाजर के रस में शहद की 5–7 बूंदें मिलाकर रोजाना पिलाना चाहिए। 100 ग्राम गाजर के रस में 50 ग्राम टमाटर का रस और 50 ग्राम संतरे का रस मिलाकर रोजाना पीने से कमजोरी दूर होती है।

धनिया – धनिया शरीर के लिए स्फूर्तिदायक है। चक्कर आने पर सूखा धनिया और आंवला 10–10 ग्राम की मात्रा में 1 गिलास पानी में भिगो दें, फिर सुबह में इसे मसलकर पानी छानकर पी जाएं। इस प्रयोग से चक्कर आना बंद हो जाएगा।

सौंफ – सौंफ कमजोरी और चक्कर आने जैसी समस्या में दाभदायी है। सौंफ का चूर्ण बनाकर इसमें बराबर मात्रा में खांड मिलाकर रख लें। सुबह में 10–10 ग्राम की मात्रा में इस चूर्ण का सेवन करने से हाथ–पांव की जलन और शरीर में भारीपन की शिकायत दूर हो जाती है।

आर्य समाज और सर सैय्यद अहमद खान

ऐ.एम.यू. अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय जिन्नाह की तस्वीर को लेकर चर्चा में है। इस अवसर पर इसके संस्थापक सर सैय्यद अहमद खान का नाम आना स्वाभाविक है। सर सैय्यद ने 1857 के काल में अंग्रेजों का भरपूर सहयोग किया। जिसके बदले उन्हें अंग्रेजों ने सर आँखों पर उठा लिया। सर सैय्यद मुसलमानों को अंग्रेजी पढ़ने एवं अंग्रेजों के प्रति वफादारी दिखाने के पक्षधर थे। इसके लिए उन्होंने एक पुस्तक का लेखन भी किया था जिसका शीर्षक था "The Loyal Mohammadans of India"

आर्य समाज के शीर्ष लोगों से सर सैय्यद अहमद खान के सम्बन्ध रहे। सर्वोपरि स्वामी दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द और लाला लाजपत राय आदि। स्वामी दयानन्द और सर सैय्यद अहमद खान की प्रथम भेंट अलीगढ़ में जनवरी 1874 में हुई थी। उस समय वे वहां के न्यायाधीश थे। स्वामी जी के विचारों से वे प्रभावित हुए और दोनों के बीच आत्मीयता स्थापित हुई। दूसरी भेंट उसी वर्ष बनारस में हुई उस समय वे बनारस में जज के रूप में नियुक्त थे। उस समय उन्होंने स्वामी जी का एक व्याख्यान अपने बंगले पर करवाया था। उनके माध्यम से स्वामी जी की बनारस के न्यायाधीश शेक्सपियर से भी भेंट हुई। 1877 में स्वामी दयानन्द ने दिल्ली में धर्म सम्मेलन का आयोजन किया था, जिसमें सर सैय्यद अहमद खान ने भाग लिया था। स्वामी जी के निधन पर सर सैय्यद ने अपने शोक सन्देश में अलीगढ़ इंस्टीट्यूट गजट 18 संख्या 79 में लिखा था, "मैं स्वामी दयानन्द सरस्वती से भली–भांति परिचित था तथा मेरा उनके प्रति आदर भाव भी था। इसका कारण इतना ही है कि वे नितांत उच्चाशय तथा विद्वान् पुरुष थे कि जिनके प्रति प्रत्येक मतालम्बी को अपना सम्मान प्रकट करना चाहिए। वे इतने महान पुरुष थे कि जिनके तुल्य भारत में किसी अन्य का मिलना मुश्किल है। अतः उनकी मृत्यु का शोक मनाना प्रत्येक व्यक्ति के लिए आवश्यक है। ऐसा अद्वितीय पुरुष हमारे बीच से उठ गया, यह चितांत शोकजनक है।" किसी प्रसंग में उन्होंने लिखा था– "स्वामी दयानन्द संस्कृत के गंभीर विद्वान् तथा वेदों के सतर्क अध्येता थे। एक उच्च विद्वान् होने के साथ साथ वे उच्च चरित्र तथा आध्यात्मिक वृत्ति के पुरुष भी थे। उनके अनुयायी उन्हें ईश्वर के तुल्य सम्मान देते थे तथा निश्चय ही वे उस सम्मान के पात्र भी थे। उन्होंने हिन्दू धर्म में अनेक सुधार किये। वे मूर्तिपूजा के कट्टर विरोधी थे तथा इस विषय को लेकर उनके पंडितों से अनेक शास्त्रार्थ भी हुए थे। जिनमें उन्होंने यह निर्विवाद रूप से सिद्ध किया था कि मूर्तिपूजा के लिये वेदों में स्वीकृति नहीं है। वे निराकार से भिन्न किसी अन्य ईश्वर की उपासना को अनुचित मानते थे। उन्होंने यह भी सिद्ध करने का प्रयास किया था कि वेदों में जड़ तत्वों की पूजा का विधान नहीं है। मेरे विचार के अनुसार स्वामी जी प्रकृति को अनादि शाश्वत मानते थे तथा उसे माया कहकर भी सम्बोधित करते थे। यदि प्रकृति की अनादिता में विश्वास नहीं रखते तो संभवतः ईश्वर के स्वरूप को लेकर उनके तथा मुसलमानों के विचारों में कोई अंतर नहीं रह जाता।"

सर सैय्यद के अंतिम कथन का भाव इतना मात्र ही है कि ईश्वर के सम्बन्ध में इस्लाम की मान्यता तथा स्वामी दयानन्द की मान्यता में अधिक अंतर नहीं है। दोनों ही ईश्वर को निराकार तथा सर्वशक्तिमान मानते हैं। अंतर यदि कुछ है तो यही कि इस्लाम में जड़ प्रकृति (माद्दा) को भी ईश्वर से ही उत्पन्न माना गया है जबकि स्वामी जी की धारणा के अनुसार ईश्वर तथा जीव की ही भाँति प्रकृति भी अनादि, अनुत्पन्न तथा शाश्वत है।

(सन्दर्भ–महर्षि दयानन्द के भक्त, प्रशंसक और सत्संगी – प्रो. भवानीलाल भारतीय)

स्वामी श्रद्धानन्द (मुशी राम) के जीवन में भी सर सैय्यद से सम्बन्ध मिलता है। मगर यह सम्बन्ध अन्य रूप में है। स्वामी जी अपनी जीवनी कल्याण मार्ग का पथिक में इस सम्बन्ध में पर्याप्त प्रकाश डालते हैं। उन दिनों संयुक्त प्रान्त में सर सैय्यद की तूती बोलती थी।. स्वामी जी के पिताजी उस समय बलिया में पुलिस में कार्यरत थे। एक मुसलमान वकील के यहाँ एक लड़की मर· गयी। मुखबिर ने कोतवाली में रपट दी कि लड़की मार डाली गयी। नायब कोतवाल ने लाश शव परीक्षण के लिए रुकवा दी। वकील सर सैय्यद के हामी थे। सर सैय्यद की सहायता से वकील ने कचहरी में तहकीकात बंद करा दी और उनके पिताजी, नायब कोतवाल और मुखबिर पर फौजदारी नालिश दायर कर दी। स्वामी जी ने अंग्रेजी में पत्र आदि लिखे। पहले बनारस में मुकदमा चला फिर इलाहाबाद हाई कोर्ट में गया। इलाहाबाद हाई कोर्ट ने तीनों के कदम को सही करार दिया। तीनों निर्दोष सिद्ध हुए। इस घटना का मुंशी राम के जीवन पर व्यापक प्रभाव पड़ा। उनके मन में यह भावना स्थिर हो गई कि सर सैय्यद निष्पक्ष नहीं, अपितु मुसलमानों के हिमायती हैं। सर सैय्यद की मुस्लिम परस्ती को सिद्ध करने के लिए स्वामी जी ने कभी अपने पत्र सद्धर्म प्रचारक में भी लेख लिखा था।

लाला लाजपत राय के सर सैय्यद से सम्बन्ध जानने योग्य हैं। लाला जी के पिताजी सर सैय्यद के बड़े प्रशंसक थे। सर सैय्यद जहां अंग्रेजों के असमर्थक थे, वहीं उन्होंने भारतीय मुसलमानों को कांग्रेस से जुड़ने से रोकने का भरपूर प्रयास किया। लाला जी उस समय कांगेस के मंच से देशहित की बात करना चाहते थे। सर सैय्यद के विरोध में उन्होंने चार पत्र उर्दू में लिखे थे, जो कोहिनूर पत्रिका मे छपे थे। 1888 में कांग्रेस के इलाहाबाद सत्र से पहले कांग्रेस के संस्थापक ए.ओ. ह्यूम ने इन्हें अंग्रेजी में अनुवादित कर छपवाया था। उस दौर में ये पत्र अत्यंत लोकप्रिय हुए। इससे न केवल लाला जी ने देशव्यापी स्तर पर प्रशंसा प्राप्त की, अपितु उस काल में सर सैय्यद को गलत भी सिद्ध किया। ये पत्र आप इंटरनेट पर इस लिंक पर पढ़ कसते हैं।

http://www.columbia.edu/itc/mealac/pritcherr/00islamlinks/txt_lajpatrai_1888/txt_lajpatrai_1888.html

पंडित गंगा प्रसाद उपाध्याय आर्यसमाज के दार्शनिक विद्वान् थे एवं इस्लाम के मर्मज्ञ भी। अपने सितम्बर 1943 के सार्वदेशिक पत्रिका के अंक में सिंध में सत्यार्थ प्रकाश रक्षा आंदोलन में सत्यार्थ प्रकाश और इस्लाम शीर्षक से लेख लिखा था। इस लेख में सर सैय्यद की इस्लामिक मान्यताओं में स्वामी दयानन्द के चिंतन का प्रभाव विषय भी आया है। गंगा प्रसाद जी लिखते है, "स्वामी दयानन्द ने सैय्यद साहिब को बताया होगा कि हिन्दू धर्म की वर्तमान कुरीतियां पुराणों के कारण है। वेद में उनका उल्लेख नहीं है। इसी का अनुसरण सर सैय्यद ने किया। उन्होंने कहना आरम्भ किया कि हम शुद्ध कुरान को मानते हैं। हदीसों को नहीं। हदीसों में इस्लाम के सिद्धांत के विरुद्ध भी बहुत सामग्री है। सर सैय्यद के लेखों और आज के इस्लामिक साहित्य का यदि सौ वर्ष पहले के इस्लामी पुस्तकों से मिलान किया जाये, तो पता चलेगा कि सत्यार्थ प्रकाश की छाप उन पर लगी हुई है।"

सर सैय्यद शैतान के बारे में लिखते हैं –

"अब ख्याल करो कि कुरान में शैतान का लफ्ज़ या नाम आया है। मगर इसकी हकीकत या माहियत (स्वरूप) कुछ बखान नहीं हुई। दिन रात हमको शैतान बहकाता है और गुनाहों में फंसाता है। मगर वजूद खारिजी महसूस नहीं होता। बल्कि हम अपनी ही सफेद दाढ़ी अपने हाथ में और अपना ही गाल लाल देखते हैं। आयतों को मिलाओं और गौर करो कि यह सब अलंकार है। इनसे मानीहकीकी मुराद नहीं है।"

जिन्होंने ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका में अहिल्या की कथा पढ़ी है, वो कह सकते हैं कि सर सैय्यद पर ऋषि का कितना प्रभाव था। सर सैय्यद अगर मुस्लिम कौम की राजनीति परिस्थिति सुधारने में न लगे रहते, तो अवश्य हमसे बहुत आगे बढ़ गए होते। जैसे पुराणों में निष्कलंक अवतार का उल्लेख है। उसी प्रकार से इस्लाम में मेंहदी अखिरुज जमा का भी है। इसके विषय में सर सैय्यद लिखते हैं –

"उन गलत किस्सों में से, जो मुसलमानों का ही मशहूर है, एक किस्सा इमाम मेंहदी अखिरूप जमा के पैदा होने का है। इस किस्से की बहुत से हदीसें लिखित हैं मगर सब झूंठी और बनावटी हैं।"

सर सैय्यद के धार्मिक चिंतन पर स्वामी दयानन्द के क्रांतिकारी चिंतनल का परिणाम स्पष्ट दीखता है। आर्यसमाज और उनसे शीर्ष नेताओं के साथ उनके खट्ठे–मीठे सम्बन्ध रहे। पाठकों के ज्ञानवर्धन हेतु यह लेख प्रकाशित किया गया है।

–डॉ. विवेक आर्य,
मोबाईल : 8076985518

गीत

बादल–बादल आंखों का जल तुम समझे हो, तुम समझोगे और समय से दंशित हर पल तुम समझे हो, तुम समझोगे

हंसते हुए वसंती मन का यह सावन सावन हो जाना दीवरों में बंद व्यथा का यह आंगन आंगन हो जाना

आंगन में घिर घुमड़े धन का कुछ धन कुछ चंदन हो जाना श्यामल श्यामल यह उदयाचल तुम समझे हो, तुम समझोगे

यात्री ही पहचान सकेगा बाधाओं की छवि पथहंता मथुराएं कब ज्ञान सकी हैं राधाओं की वृंदावनता

तुमने मुझे बताई मेरी वंधी की हरमन भावनता अंचल अंचल भीगा चाहल तुम समझे हो, तुम समझोंगे।

–श्रीमती सुनीता बुग्गा (मंत्राणी)
आर्य समाज हनुमान रोड, नई दिल्ली

श्री चतर सिंह नागर जी का सम्मान

श्री चतर सिंह जी नागर, दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मंडल एवं भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा के महामंत्री का श्रीमद् दयानन्द वेदार्ष महाविद्यालय, गौतम नगर के आचार्य स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता एवं संस्थामंडल व विद्वानों, सानिध्य में नागरिक अभिनंदन किया गया। शुद्धि सभा की ओर से बधाई ।

–नरेन्द्र वलेचा, प्रधान

श्रद्धांजली

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस 23 दिसम्बर प्रातः 2018 के अवसर पर दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मंडल के तत्वावधान में डेरा आर्य समाज महरौली, नई दिल्ली में आयोजित भारतीय हिन्दू सभा के महामंत्री चतर सिंह नागर ने स्वामी जी को श्रद्धांजली अर्पित की ।

शुद्धि सभा के महामंत्री श्री नागर जी ने 23 दिसम्बर 2018 को सायं 5 बजे आर्य समाज शकरपुर नई दिल्ली प्रधान श्रीमान पतराम जी त्यागी जी की अध्यक्षता में आयोजित स्वामी जी को श्रद्धांजली अर्पित करते हुये उन्हें महर्षि देव दयानन्द का मानस पुत्र निर्भीक संन्यासी कर्मठ एवं तेजस्वी संन्यासी एवं वैदिक शिक्षा प्रसार एवं धर्मान्तरण रोकने के भागीरथ प्रयासों के प्रति अविस्मरणीय योगदान की सराहना की। आपने स्वामी के जीवन से सम्बन्धित पुस्तक कल्याण मार्ग के पथिक, मेरे पिता, हिन्दू संगठन एवं मोपला पढ़ने के लिये सभी को प्ररित किया।

उन्होंने बताया कि स्वामी जी का बलिदान केवल शुद्धि कार्य के कारण हुआ। स्वामी जी ने अपने जीवन के अन्तिम समय में कहा था कि मैं रहूँ या न रहूँ शुद्धि कार्य बन्द नहीं होना चाहिये। – संपादक

सूचनाऐं –

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद द्वारा 92वाँ स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस 23 दिसंबर 2018 को प्रेवश वर्मा सांसद जी के निवास स्थान पर मनाया गया प्रवेश वर्मा जी ने कहाँ कि स्वामी श्रद्धानन्द जी ने देश के लिए अपना बलिदान दिया भारत सरकार के पूर्व खेल मंत्री विक्रम वर्मा जी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहाँ कि भारतीय संस्कृति पर हम सब को गर्व होना चाहिए मुख्य वक्ता आर्य जगत के युवा विद्वान् आचार्य गवेन्द्र जी ने कहाँ कि स्वामी श्रद्धानन्द धर्मवीर थे कर्म वीर दानवीर थे उन्होंने स्वदेश, स्वभाषा स्व संस्कृति देश धर्म जाति के लिए अपना बलिदान दिया।

–अनिल आर्य संयोजक

आर्य समाज माडल टाउन–1, दिल्ली–9 का चार दिवसीय वार्षिकोत्सव बड़े उत्साह एवं श्रद्धा से मनाया गया, जिसमें आचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी द्वारा वेद कथा हुई।

– कृष्ण देव आर्य (मंत्री)

दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मंडल के प्रधान एवं भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा के उप–प्रधान की ओम प्रकाश जी यजुर्वेदी का 25 दिसम्बर 2018 को आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली ने रामलीला मैदान में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर आयोजित सभा में प्रशीत्तपत्र शाल द्वारा सम्मानित किया गया।

माह दिसम्बर 2018 के आर्थिक सहयोगी

श्री कीर्ति शर्मा जी, प्रधान आर्य समाज, करोल बाग, नई दिल्ली		5009/–
श्री सुभाष चन्द्र दुआ जी, शुशान्त लोक–1, गुड़गांव हरि.		2600/–
श्री यशपाल शास्त्री जी, अशोक विहार फेज–1, दिल्ली	वार्षिक सहायता	1800/–
आर्य समाज कृष्ण नगर, दिल्ली		1100/–
श्री चतर सिंह नागर जी, महामंत्री, शुद्धि सभा द्वारा एकत्रित		1100/–
आर्य समाज अनारकली मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली	मासिक	1000/–
आर्य समाज साकेत, नई दिल्ली	मासिक	800/–
श्री चतर सिंह नागर जी, महामंत्री, शुद्धि सभा	मासिक	500/–
श्री मेजर एस.पी. कोहली जी, डी.डी.ए. फ्लैट, मुनिरिका, नई दिल्ली		500/–
श्री ब्रहमदेव भाटिया जी, पश्चिम विहार, नई दिलली		500/–
आर्य टूरिस्ट लॉज, आराकशन रोड़, पहाड़गंज, नई दिल्ली		500/–
श्री शिव कुमार मदान जी, ट्रस्टी, जनकपुरी, नई दिल्ली	मासिक	250/–
आर्य समाज नांगलोई, नई दिल्ली		200/–
श्रीमती सुशीला चावला जी, पीतमपुरा, दिल्ली	मासिक	100/–

श्रीमती संतोष वधवा जी , नारायणा विहार द्वारा एकत्रित दान

डॉ. अनिल गुलाटी जी, नारायणा विहार, नई दिल्ली–28		2100/–
अपने पूज्य पिताजी स्व. रोशन लाल गुलाटी की पुण्य स्मृति में		
श्रीमती ऊषा सक्सेना जी, नारायणा विहार, नई दिल्ली–28	आजीवन	500/–
श्रीमती सुमित्रा गुप्ता जी, नारायणा विहार, नई दिल्ली–28		100/–
श्रीमती सुदेश सच्चर जी, नारायणा विहार, नई दिल्ली–28		100/–
श्रीमती स्वराज थापर जी, नारायणा विहार, नई दिल्ली–28		100/–
श्रीमती आशा मुटरेजा जी, नारायणा विहार, नई दिल्ली–28		100/–
श्रीमती प्रवेश बग्गा जी, नारायणा विहार, नई दिल्ली–28		100/–
श्रीमती संतोष वधवा जी, नारायणा विहार, नई दिल्ली–28		100/–
श्री करण सिंह तवंर जी, नारायणा विहार, नई दिल्ली–28		100/–
श्री रविन्द्र गर्ग जी , नारायणा विहार, नई दिल्ली–28		100/–

आर्य समाज केरल मल्लापुरम का पुर्ननिर्माण

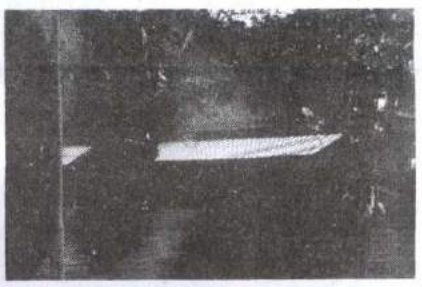

केरल में मल्लापुरम जिला 1921 में हुई वीभत्स दुर्घटना का गवाह रहा है जहां जहारों हिंदुओं का क्रूर मुस्लिमों द्वारा खिलाफत आन्दोलन के समय कल्लेआम, हिन्दु स्त्रियों के साथ बलात्कार, उनके घरों की लूट व उनके धर्म परिवर्तन किये गये। तब आर्य समाज की पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा ने स्वामी श्रद्धानन्द जी, महात्मा हंसराज जी, पं ऋषि राम जी इत्यादि को हिन्दुओं की रक्षा हेतु केरल में इस स्थान पर भेजा था जिसने **पोन्नानी में हज़ारों हिंदुओं को बचाया व** वैदिक संस्कृति में लाकर उनकी रक्षा की। बाद में इस भवन पर स्थानीय तत्त्वों द्वारा कब्जा कर लिया गया था।

अभी 2018 मे आई केरल की बाढ़ में यह भवन पूरी तरह से ढह गया था। आर्य समाज, वेल्लीनेझी, पल्लक्कड़, केरल, ने 25 दिसंबर 2018 को स्वामी श्रद्धानंद बलिदान दिवस पर स्थानीय आर्यों के सहयोग से बृहद् अग्निहोत्र के साथ स्वामी आशुतोष जी परिव्राजक, श्री बालेश्वर मुनी जी, दिल्ली श्री पं. के एम राजन, आर्य नेता केरल, आचार्य वामदेव आर्य जी व अन्य अनेक हिन्दू नेताओं के नेतृत्व में पन्ननी आर्य समाज की पुनर्रचना कार्य आरम्भ किया। निवेदन – आर्य समाज, वेलीनेझी का निवेदन है कि भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा इस पुनीत कार्य को आशीर्वाद देश अपनी एक टीम को सहायतार्थ यहां भेजे। धन्यवाद

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के 40वें वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में
वायु प्रदुषण, पर्यावरण शुद्धि व राष्ट्र की सुख समृद्धि हेतु
डॉ. अशोक कुमार चौहान की अध्यक्षता व आचार्य अखिलेश्वर जी के ब्रह्मत्व में
स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी प्रणवानन्द जी, स्वामी श्रद्धानन्द जी के सान्निध्य में

251 कुण्डीय विराट् यज्ञ

एवम्

अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन

दिनांक : 1, 2, 3, फरवरी 2019 (शुक्रवार, शनिवार, रविवार)
स्थान : पंजाबी बाग स्टेडियम, रिंग रोड, नई दिल्ली–110026 (मेट्रो स्टेशन, पंजाबी बाग)
राष्ट्रीय एकता शोभा यात्राः शनिवार, 2 फरवरी 2019, प्रातः 10:30 बजे से

हज़ारों की संख्या में पहुँचकर आर्य समाज की विराट् संगठन शक्ति का परिचय दें।

अनिल आर्य (संयोजक) मो. 9810117464, 9213402628

R.N.I. No. 43084/76 Date of Publication 01-01-2019 (pages 8) Posting Date : 2-3 Every Month
Delhi Postal R.No. G-3/DL (N) 060/2018-20

सेवा में,

शुद्धि समाचार
जनवरी – 2019

संक्रान्तियां और भ्रान्तियां

मकर संक्रान्ति का पर्व सम्पूर्ण भारत में किसी न किसी रूप में बड़ी श्रद्धा-भक्ति और हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। उत्तर भारत में मकर संक्रान्ति, पंजाब में लोहड़ी व माघी तथा दक्षिण भारत में इसे पोंगल के रूप में प्रति वर्ष 14 जनवरी को मनाया जाता है।

पौराणिक मान्यता के अनुसार इस दिन सूर्यदेव दक्षिणायन काल से निवृत होकर उत्तरायन काल में प्रवेश कर जाते हैं। इसी मान्यता के अनुसार दक्षिणायन काल को अशुभ और उत्तरायन काल को शुभ माना जाता है। धर्म ग्रन्थों में उत्तरायन को देवयान भी कहा गया है। मान्यता के अनुसार इस काल में प्राण त्यागने वाले प्राणी की सद्गति हो जाती है, उसे देवपद प्राप्त हो जाता है। इस संदर्भ में विद्वान लोग महाभारत काल में शरशैय्या पर पड़े भीष्मपितामह का उदाहरण भी दिया करते हैं। मकर संक्रान्ति के सम्बन्ध में जो रूढिवादी परम्परायें स्थापित हो चुकी हैं, उनमें प्रातः काल उठकर पवित्र नदियों व सरोवरों आदि में स्नान करना तथा यज्ञ-हवन, पूजा-पाठ व दान-दक्षिण आदि कर्म करना, क्योंकि ऐसा करने से उसके पाप-ताप नष्ट हो जाते हैं और वह पुण्य का भागी बनता है। वैसे वेद-शास्त्रों के अनुसार प्रत्येक मनुष्य को यह शुभ कर्म प्रतिदिन करने चाहिए। वर्ष भर तो अशुभ कर्म करते रहें और किसी पर्व के दिन थोड़े से शुभ कर्म कर लेने मात्र से पिछले सब पाप-ताप नष्ट हो जायेंगे, यह केवल अविद्याजन्य और मूर्खों को बहकाने की बातें हैं और केवल पौराणिक पोपों की पेट-पूजा व उनके पूर्वजों द्वारा स्थापित दुकानदारी को यथावत् जारी रखने षड़यंत्र मात्र है।

सर्वप्रथम तो हमें यह जान लेना उचित होगा कि क्या 14 जनवरी को मनायी जाने वाली मकर संक्रान्ति और 14 अप्रेल को मनायी जाने वाली वैशाखी पर्व वैदिक पर्व हैं? क्योंकि ईशवी तिथियों में नियत किये गए पर्व वैदिक पर्व हो ही नहीं सकते। अपितु अंग्रेजों की दासता के समय प्रारम्भ किये गये पर्व विशुद्ध पौराणिक पर्व हैं। महाभारतकालीन भीष्मपितामह के दृष्टान्त से इस पर्व के साथ सम्बन्ध जोड़ना, इस पर्व को प्राचीन सिद्ध करने की नितान्त पौराणिक सम्प्रदायों की कल्पना मात्र है। महाभारत काल में केवल चन्द्रमास पर आधारित काल गणना हुई थी। आर्यों के लगभग सभी पर्व/त्योहार चन्द्र मास पर आधारित तिथियों, पूर्णिमा व अमावस्यादि तिथियों पर आधारित होते थे, जैसे-होलिका, गुरु पूर्णिमा, रक्षा बन्धन, दीपावली, विजयादशमी और नवरात्रे आदि।

हमारी पृथ्वी लगभग 365 दिनों में सूर्य की एक परिक्रमा पूरी करती है, इसे एक सौर वर्ष कहा जाता है। पृथिवी की इस परिक्रमा को 30-30 अंश पर बारह स्थानों/राशियों में विभाजित करने पर मधु-माधव आदि बारह और मास बनते है और संक्रान्तियां एवं राष्ट्रीय शक सवंत् इन्हीं सौर मासों पर आधिारित हैं। दूसरी पद्धति चन्द्र मास पर आधारित है। पृथिवी का उपग्रह चन्द्रमा जितने दिनों में पृथिवी की एक परिक्रमा करता है उसे एक चन्द्र मास कहा गया है। हमारे अधिकतर त्योहार/पर्व चन्द्र मास पर आधारित है। पूर्व काल में केवल युग गणना ही प्रचलन में थी, किन्तु महाभारत के कुछ काल पश्चात् 2067 वर्ष पूर्व विक्रमी संवत्, जो चन्द्र मास पर आधारित है और इसके बाद 1932 वर्ष पूर्व शक संवत प्रारम्भ हुआ था जोकि पूर्णरूपेण सौर मासों पर आधारित है। राशि परिवर्तन के साथ ही प्रत्येक सौर मास भी प्रारम्भ होता है। किन्तु अंग्रेजों की दासता के पश्चात् मकर संक्रान्ति/माघी और मेष संक्रान्ति/वैशाखी को ईशवी सन् के साथ जोड़कर 14 जनवरी और 14 अप्रैल के दिन निश्चित करके मनाना अपनी संस्कृति और खगोल विज्ञान को नकारना है। इन लोगों को यह तथ्य जान लेना चाहिए कि वर्तमान ईशवी कलैण्डर की गणना का आधार मात्र 457 वर्ष पुराना है।

हमारी पृथिवी सौर मण्डल अर्थात्-सूर्य परिवार की एक सदस्य है। सौर मण्डल में कुल नौ ग्रह और इन ग्रहों के अनेक उप ग्रह हैं। सूर्य के नौ ग्रह-बुध, शुक्र, पृथिवी, मंगल, बृहस्पति, शनि, अरूण, वरूण व यम हैं। हमारी पृथिवी का एक उपग्रह चन्द्रमा है। पृथिवी 60 के कोण पर सीधी न खड़ी होकर लगभग 66.5 के कोण पर उत्तर की ओर झुकी हुई है। पृथिवी के इसी झुकाव के कारण दिन-रात छोटे-बड़े व ऋतुएं आदि बनती हैं। पृथिवी की तीन गतियां हैं- (प्रभम) अपनी धुरी पर चौबीस घण्टों में एक चक्कर लगाना, (द्वितीय) लगभग 365 दिनों में सूर्य का एक चक्कर लगाना जिसे एक सौर वर्ष कहा जाता है और (तृतीय) सूर्य के साथ आकाश गंगा/निहारिका में घूमना। पृथिवी का उपग्रह चन्द्रमा लगभग 29.5 दिनों में पृथिवी की एक परिक्रमा पूरी करता है, जिसे चन्द्र मास कहा जाता है। हमारे अधिकतर त्योहार/पर्व चन्द्र मास पर आधारित हैं। पूर्णिमा और अमावस्या आर्य/हिन्दुओं के मुख्य पर्व हैं और होलिका व दीपावली आदि पर्व भी इन्हीं तिथियों में आते हैं। बहुत से पढ़े-लिखे सज्जनों को शायद यह भी ज्ञान नहीं है कि सूर्य और चान्द को ग्रहण क्यों और कैसे लगता है? चन्द्रमा पूर्णिमा तक कैसे बढता है और पूर्णिमा के बाद घटना कैसे है? पूर्णिमा को चान्द पूरा क्यों दिखाई देता है और अमावस्या को अदृश्य क्यों हो जाता है? जोकि यह अन्तरिक्ष में घटने वाली साधारण सी घटनायें हैं। पूर्व कथन के अनुसार चन्द्रमा द्वारा पृथिवी की एक परिक्रमा करने पर एक चन्द्र मास बनता है। चन्द्रमास के दो पक्ष हैं, एक शुक्ल पक्ष और दुसरा कृष्ण पक्ष। प्रकृति के नियमानुसार चन्द्रमा की यह यात्रा शुक्ल पक्ष की एकम् को प्रारम्भ होती है और अमावस्या को समाप्त हो जाती है। अतः प्रत्येक चन्द्र मास शुक्ल पक्ष की एकम् से प्रारम्भ होकर अमावस्या को पूर्ण होता है, किन्तु यहाँ तो प्रकृति के नियमों के विरुद्ध हजार-पन्द्रह सौ वर्षो से उलटी गंगा बह रही है। मास कृष्ण पक्ष की एकम् से प्रारम्भ हो रहा है और सब बिना विचारे उसे मानते जा रहे हैं। संवतसर (वर्ष), युग संवत् और सृष्टि संवत् आदि सभी चैत्र शुक्ला प्रतिपदा से प्रारम्भ होते है, किन्तु चैत्र आदि सभी मास कृष्ण पक्ष की एकम् से ही प्रारम्भ करते हैं और इस उल्टी गंगा के कारण प्रत्येक मास में 15 दिनों की गड़बड़ हो रही है, जिसके कारण कई पर्व गलत तिथियों और गलत मास में मनाये जाते हैं। अब इन बातों को विचारने के लिए तो किसी के पास समय ही नहीं है। किसी भी शुभाशुभ तिथि में पर्व मना लो, क्या फर्क पड़ता है? अवश्य पड़ता है, क्योंकि अशुभ तिथियों में त्योहार व पर्व मनाना अलाभकारी व अमंगलकारी होता हैं। ऋषि-मुनियों द्वारा प्रारम्भ किये गए त्योहार/पर्व/व्रत आदि प्राकृतिक नियमों पर आधारित हैं और इनका असमय पर मनाने का कोई औचित्य या लाभ नहीं है।

आचार्य प्रेमपाल शास्त्री,
अध्यक्ष, आर्य पुरोहित सभा दिल्ली

स्वामी श्रद्धानन्द जी के 92वें बलिदान दिवस पर विशाल शोभायात्रा में शुद्धि सभा की झांकी ।

कई वर्षों के पश्चात इस बार शुद्धि सभी की ओर से स्वामी श्रद्धानन्द जी की झांकी जिसमें वह जामा मस्जिद पर अपना वयाख्यान से संबोधित कर रहे हैं । इस अवसर पर शुद्धि सभा के महामंत्री श्री चतर सिंह नागर एवं श्री बनवारी लाल साथ में नज़र आ रहे हैं।

मुद्रक, व प्रकाशक – रामनाथ सहगल द्वारा गुरमत प्रिंटिंग प्रेस, 1337, संगतरासन, पहाड़ गंज, नई दिल्ली-55 दूरभाष : 23561625, से मुद्रित एवं भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा, 6949, बिड़ला लाइन दिल्ली-7 चलभाष : 9711258445, 9718550459 से प्रकाशित। सम्पादक : आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, सह-सम्पादकः डॉ. देवेश प्रकाश आर्य